

श्री मुनिराज-स्तुति

- ऐसे मुनिवर द्वेषं, वनमें.....(२)
जाके राग-द्वेष नहीं तनमें.....
- श्रीष्म ऋतु शिखर के उपर.....(२)
मगन रहें ध्याननमें.....१
- यातुर्मास तरुतल ठाडे.....(२)
बुंढ सहे छिन छिन में.....२
- शीतमास दरिया के किनारे.....(२)
धीरज धारे ध्याननमें.....३
- ऐसे गुरुको मैं नित प्रति ध्याऊं.....(२)
देत ठोक यरणनमें.....४

